पाठ 9

*फरवरी 22 - 28

लौकिक संघर्ष
(The Cosmic Conflict)

सब्त दोपहर

इस सप्ताह के अध्ययन के लिए पढ़ें: मती 13:24-27; उत्पत्ति 1:31; यहेज. 28:12-19; यशा. 14:12-15; मती 4:1-11; यूहन्ना 8:44, 45.

याद वचन: "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)।

बाइबलीय धर्मशास्त्र में केंद्र बिंदु मसीह और शैतान के बीच महान संघर्ष है। हालाँकि परमेश्वर और पतित आकाशीय प्राणियों के बीच, जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया है, एक लौकिक संघर्ष का विचार पवित्रशास्त्र का एक प्रमुख उद्देश्य है (मत्ती 13:24-30, 37-39; प्रका. 12:7-10) और यह प्रचलित भी है; अधिकांश ईसाई परंपरा में, कई ईसाइयों ने इस पूरे विचार को अस्वीकार या उपेक्षित कर दिया है।

हालाँकि, बाइबल के दृष्टिकोण से एक लौकिक संघर्ष का विषय, जिसमें परमेश्वर के राज्य का शैतान और उसके स्वर्गदूतों द्वारा विरोध किया जाता है, ऐसा नहीं है कि हम बाइबल की कहानियों के बारे में बहुत कुछ खोए बिना उपेक्षा कर सकते हैं। केवल सुसमाचार ही शैतान और राक्षसों के संदर्भ से भरे हुए हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं।

*सब्त, मार्च 1 की तैयारी के लिए इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

इस सप्ताह की शुरुआत में, हम बताएंगे कि बाइबल के कुछ महत्वपूर्ण अंशों के अनुसार निम्नलिखित दो प्रश्नों का उत्तर कैसे दिया जा सकता है:

(1) पवित्रशास्त्र कहाँ सिखाता है कि परमेश्वर और शैतान के बीच एक लौकिक संघर्ष है?

(2) पवित्रशास्त्र के अनुसार संघर्ष का स्वरूप क्या है?

रविवार **फरवरी 23**

एक दुश्मन ने ऐसा किया है

मत्ती 13:24-27 पढ़ें। यह दृष्टांत हमें हमारी दुनिया में बुराई को समझने में कैसे मदद करता है?

_____

_____

यीशु एक जमींदार की कहानी बताता है जो अपने खेत में केवल अच्छे बीज बोता है। हालाँकि, गेहूँ के बीच में जंगली पौधे उग आते हैं। यह देखकर मालिक के नौकर उससे पूछते हैं, "हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधो उसमें कहाँ से आए?" (मत्ती 13:27)। यह उस प्रश्न के समान है जो आज बुराई की समस्या के संबंध में अक्सर पूछा जाता है: यदि परमेश्वर ने दुनिया को पूरी तरह से अच्छा बनाया है, तो इसमें बुराई क्यों है?

मती 13:37-40 में मसीह की व्याख्या के प्रकाश में मती 13:28-30 पढ़ें। यह लौकिक संघर्ष की प्रकृति पर भी कैसे प्रकाश डालता है?

_____

_____

स्वामी अपने नौकर के प्रश्न का उत्तर देता है: "'किसी शत्रु ने ऐसा किया है" (मत्ती 13:28)। यीशु ने बाद में उसकी पहचान "जो अच्छा बीज बोता है" को "मनुष्य के पुत्र" के रूप में किया, जो स्वयं यीशु है (मत्ती 13:37), और समझाता है कि "खेत ही संसार है" (मती 13:38), और "शत्रु जिसने बोया" "जंगली बीज" "शैतान" है (मती 13:39), जो स्पष्ट रूप से मसीह और शैतान के बीच एक लौकिक संघर्ष को दर्शाता है। संसार

में बुराई क्यों है? बुराई उस शत्रु (शैतान) का परिणाम है जो स्वामी का विरोध करता है। "किसी शत्रु ने यह किया है" (मत्ती 13:28)।

हालाँकि, यह उत्तर अनुवर्ती प्रश्न को उकसाता है, "क्या आप चाहते हैं कि हम जाएं और उन्हें इकट्ठा करें?" दूसरे शब्दों में, बुराई को तुरंत क्यों नहीं उखाड़ फेंका जाए? "नहीं," स्वामी उत्तर देता है, "'ऐसा न हो कि जब तुम जंगली बीज इकट्ठा करो तो उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ दो। कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो" (मत्ती 13:29, 30; मरकुस 4:29 से तुलना करें)। दृष्टांत के अनुसार, परमेश्वर अंततः बुराई का अंत कर देगा, लेकिन समय से पहले इसे उखाड़ने से अपरिवर्तनीय संपार्श्विक (मूल्यवान) क्षति होगी जो अच्छे को नुकसान पहुंचाती है।

अब गेहूं से जंगली पौधे उखाड़ने की कोशिश में कुछ खतरे क्या हैं? साथ ही, इसका अर्थ केवल उस बुराई को नजरअंदाज करना क्यों नहीं है जिसका हम सामना करते हैं?

सोमवार **फरवरी 24**

संसार पर विवाद की उत्पत्ति

दृष्टांत में इस प्रश्न के समानांतर – कि यदि मालिक ने केवल अच्छा बीज बोया है तो खेत में बुरे बीज क्यों हैं – एक और प्रश्न है: यदि परमेश्वर ने दुनिया को पूरी तरह से अच्छा बनाया है, तो यहाँ बुराई कैसे पैदा हुई?

उत्पत्ति 1:31 पढ़ें. जब परमेश्वर ने सृष्टि का काम पूरा किया तब परमेश्वर के वचन सृष्टि की स्थिति के बारे में क्या प्रकट करते हैं, और यह उत्तर महत्वपूर्ण क्यों है?

उत्पत्ति 1:31 के अनुसार, जब परमेश्वर ने संसार की रचना पूरी की, तो यह "बहुत अच्छा" था। उत्पत्ति 1 में, परमेश्वर द्वारा इस ग्रह की रचना में बुराई का कोई संकेत नहीं है। तो फिर, बुराई मानव अनुभव में कैसे आई?

उत्पत्ति 3:1–7 पढ़ें। यह हमें क्या बताता है कि पृथ्वी पर बुराई कैसे आई? यह लौकिक संघर्ष की प्रकृति पर क्या प्रकाश डालता है? (प्रकाशितवाक्य 12:7–9 भी देखें)।)

इस कहानी में, हम साँप द्वारा उठाए गए परमेश्वर के चरित्र के बारे में झूठ देखते हैं, जिसे प्रकाशितवाक्य 12:7-9 में स्वयं शैतान (वह "पुराना साँप") के रूप में पहचाना जाता है। साँप पहले प्रश्न का उपयोग परमेश्वर की आज्ञा पर संदेह करने के लिए करता है, और अपने प्रश्न में परमेश्वर ने जो आदेश दिया था उसे लगभग उलट देता है। फिर, साँप ने सीधे तौर पर परमेश्वर द्वारा कही गई बात को चुनौती देते हुए हव्वा से कहा, "तू निश्चय नहीं मरेगी" (उत्पत्ति 3:4)।

किसी ने, या तो साँप ने या परमेश्वर ने, हव्वा से झूठ बोला था, जिसके पास अब यह चुनने का विकल्प है कि क्या वह उस पर विश्वास करेगी जो परमेश्वर ने उससे कहा था या जो साँप ने किया था।

यहाँ और पवित्रशास्त्र में अन्यत्र, इस संघर्ष की प्रकृति मुख्य रूप से इस बात पर है कि क्या और किस पर विश्वास किया जाए, जो स्वयं प्रेम से अभिन्न रूप से संबंधित है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी के बारे में आपकी धारणाएँ, वह किस तरह का व्यक्ति है, और क्या उस पर भरोसा किया जा सकता है, इसका गहरा प्रभाव पड़ता है कि आप उस व्यक्ति से प्रेम करेंगे और उस पर भरोसा करेंगे या नहीं और, इस मामले में, वह आपको जो बताता है उसे सुनें।

उत्पत्ति 3:15 पढ़ें. साँप के प्रति परमेश्वर का यह कथन कि स्त्री का वंश, मसीहा का उल्लेख करते हुए, साँप के सिर को कुचल देगा, अक्सर पवित्रशास्त्र में पहले सुसमाचार (प्रोटोएवेंजेलियम) के रूप में पहचाना जाता है। यह दोनों संघर्ष की वास्तविकता को कैसे सुदृढ़ करते हैं और फिर भी इसके बीच में हमारे लिए आशा कैसे प्रदान करते हैं?

मंगलवार **फरवरी 25**

स्वर्ग में विवाद की उत्पत्ति

अकेले उत्पत्ति 1-3 से पता चलता है कि आदम और हव्वा के पतन से पहले बुराई मौजूद थी। वैचारिक रूप से, "बुराई" पहले ही प्रकट हो चुकी है, "अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" के नाम पर (उत्प. 2:9, 17)। तब सांप परमेश्वर पर झूठ बोलने का आरोप लगाता है, जबकि वास्तव में,

वह, सांप ही झूठ बोल रहा है। साँप का अस्तित्व (प्रका. वा. 12:9), उसके झूठ के साथ, वहाँ बुराई की वास्तविकता को दर्शाता है। इस प्रकार, पतन से पहले अदन में भी, बुराई की उपस्थिति प्रकट होती है।

निर्गमन 25:19, 20 के आलोक में यहेजकेल 28:12-19 पढ़ें। इस प्राणी के पतन की प्रकृति क्या है?

_____

_____

इस अनुच्छेद के अनुसार, बुराई की उत्पत्ति और लौकिक संघर्ष स्वर्ग में शुरू हुआ। पतन से पहले, वह प्राणी जो शैतान के नाम से जाना जाने लगा, एक ढकने वाला करूब था। इस करूब के रूप में पहचाने जाने के अलावा, वह "पूर्णता की मुहर, ज्ञान से भरपूर और सुंदरता में परिपूर्ण" था और "अदन, परमेश्वर की बारी में" था (यहेज. 28:12, 13)। इनमें से कोई भी बात सोर के मानव राजा (या किसी अन्य मानव) के बारे में नहीं कही जा सकती। इसलिए, हम जानते हैं कि हमें यहाँ लूसिफर के पतन की एक झलक दी गई है।

यशायाह 14:12-15 पढ़ें। यह महान विवाद की उत्पत्ति पर कौन सा अतिरिक्त प्रकाश डालता है?

_____

_____

यशायाह 14 के अनुसार, लूसिफर ने स्वयं को ऊँचा उठाने और स्वयं को परमेश्वर के समान बनाने का निर्णय लिया। यह पद हमने यहेजकेल 28 में जो देखा, उसका पूरक है, कि उसकी "सुंदरता" के कारण उसका "हृदय फूल गया" (यहेजकेल 28:17), जिससे उसे उस परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए थी जिसने उसे सुंदर बनाया। इसके बजाय, उसमें घमंड पैदा हो गया। इससे भी बदतर, इस अहंकार में, वह परमेश्वर का स्थान लेने और उसकी निंदा करने के लिए निकल पड़ा। यहेजकेल 28:16 में "व्यापार" के लिए इब्रानी शब्द का अर्थ "बदनामी" भी है, जो इस बात का संकेत है कि शैतान परमेश्वर के खिलाफ और हमारे खिलाफ भी कैसे काम करेगा।

हम इस तथ्य को कैसे समझें कि लूसिफर, जो स्वर्ग से गिर गया, मूल रूप से "संपूर्ण" था। . . जिस दिन से "उसकी रचना की गई," जब

तक उसमें अधर्म नहीं पाया गया" (यहेजकेल 28:15)? एक पूर्ण प्राणी का पतन कैसे हो सकता है जब तक कि "संपूर्ण" होने में सच्ची नैतिक स्वतंत्रता शामिल न हो?

बुधवार **फरवरी 26**

यदि तुम मेरी उपासना करो

मती 4 और लूका 4 में पाई गई परीक्षा की कहानी में परमेश्वर के सिंहासन को हड़पने की शैतान की योजना का भी पता चलता है। यीशु और लालच देने वाले के बीच के विचित्र मुलाकात में, संघर्ष की प्रकृति के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। यहाँ हम मसीह और शैतान के बीच महान विवाद की वास्तविकता देखते हैं, लेकिन स्पष्ट और पूर्ण शब्दों में।

मत्ती 4:1-11 पढ़ें। मसीह और शैतान के बीच महान विवाद की वास्तविकता यहाँ कैसे प्रकट हुई है?

_____

_____

आत्मा ने यीशु को इस स्पष्ट उद्देश्य के लिए जंगल में "नेतृत्व" किया था कि यीशु को "शैतान द्वारा प्रलोभित किया जाना था" (मत्ती 4:1)। और इस पूर्वनिर्धारित मुलाकात का सामना करने से पहले, यीशु ने चालीस दिनों तक उपवास किया। इसलिए जब शैतान आया, तो उसने यीशु की अत्यधिक भूख की स्थिति पर अपना दांव लगाते हुए, यीशु को पत्थरों को रोटी में बदलने के लिए प्रलोभित किया। लेकिन यीशु ने पवित्रशास्त्र से इस लालच का मुकाबला किया और शैतान की चाल विफल हो गई।

फिर, यीशु को अभिमान करने के प्रयास में, शैतान ने यीशु को मंदिर के शिखर से नीचे गिरने के लिए प्रलोभित किया। शैतान ने धर्मशास्त्र को तोड़-मरोड़कर पेश किया कि यदि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र होता, तो स्वर्गदूत उसकी रक्षा करते। लेकिन धर्मशास्त्र को सही ढंग से पढ़ने से, यीशु फिर से लालच का मुकाबला करता है।

तीसरा लालच (प्रलोभन) स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि शैतान क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा है। वह चाहता है कि यीशु उसकी आराधना करे। शैतान उस आराधना को अपने पक्ष में करने का प्रयास करता है जो केवल परमेश्वर का है।

और ऐसा करने के लिए, वह यीशु को "दुनिया की सारी महिमा" को दिखाता है और कहता है: "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा" (मत्ती 4:8, 9)। वास्तव में, लूका 4:6 में, एक पाठ जो मती के समान है, शैतान का दावा है: "मैं यह सब अधिकार, और वैभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है : और जिसे चाहता हूँ उसी को देता हूँ" (लूका 4:6)।

एक बार फिर, यीशु ने पवित्रशास्त्र के वचन के द्वारा इस परीक्षा का मुकाबला किया, और शैतान फिर से विफल हो गया।

तीनों मामलों में, यीशु ने दुश्मन के हमलों से बचाव के लिए पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल किया।

इफिसियों 6:12 हमें याद दिलाता है कि "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" हालाँकि हमें डर में नहीं रहना चाहिए, लेकिन हमें अपने आस-पास चल रहे संघर्ष की वास्तविकता को हमेशा क्यों याद रखना चाहिए?

गुरुवार **फरवरी 27**

लौकिक संघर्ष की प्रकृति

हमने कुछ अंश देखे हैं जो परमेश्वर और शैतान के बीच एक लौकिक संघर्ष के बारे में बतलाते हैं। लेकिन ऐसा संघर्ष कैसे संभव है? कोई सर्वशक्तिमान परमेश्वर का विरोध कैसे कर सकता है? यदि लौकिक संघर्ष महज शक्ति पर होता, तो यह शुरू होने से पहले ही ख़त्म हो गया होता। यह अलग तरह का होना चाहिए। वास्तव में, पवित्रशास्त्र से पता चलता है कि संघर्ष परमेश्वर के चरित्र पर एक विवाद है - परमेश्वर के खिलाफ शैतान द्वारा लगाए गए निंदनीय आरोपों पर एक संघर्ष, कि (अन्य बातों के अलावा) वह पूरी तरह से भला और प्रेम करने वाला नहीं है। ऐसे दावों को शक्ति या पाशविक बल से नहीं बल्कि दो प्रतिस्पर्धी पात्रों की तुलना करके हराया जा सकता है।

"पाप से निपटने में, परमेश्वर केवल धार्मिकता और सत्य को ही नियोजित कर सकता है। शैतान वह उपयोग कर सकता है जो परमेश्वर नहीं

कर सकता – जैसे चापलूसी और छल। उसने परमेश्वर के वचन को गलत साबित करने की कोशिश की थी और स्वर्गदूतों के सामने सरकार की अपनी योजना को गलत तरीके से प्रस्तुत किया था, यह दावा करते हुए कि परमेश्वर स्वर्ग के निवासियों पर सिर्फ कानून और नियम स्थापित करने में नहीं था; वरन अपने प्राणियों से समर्पण और आज्ञाकारिता की मांग के तहत, वह केवल स्वयं के उत्थान की चाहत करता था। इसलिए, स्वर्ग के निवासियों के साथ-साथ सभी संसारों के सामने यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि परमेश्वर की सरकार न्यायपूर्ण थी, उसका नियम परिपूर्ण था। शैतान ने ऐसा प्रकट किया था कि वह स्वयं ब्रह्माण्ड की भलाई को बढ़ावा देना चाह रहा था। अधिकार हड़पने वाले का असली चरित्र और उसका वास्तविक उद्देश्य सभी को समझना चाहिए। उसके पास अपने दुष्ट कार्यों से खुद को प्रकट करने का समय होना चाहिए।" – एलेन जी व्हाइट, द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, पेज 498.

प्रशितवाक्य 12:7-9 के आलोक में यूहन्ना 8:44, 45 पढ़ें। ये अंश शैतान के चरित्र और उसकी रणनीति के बारे में क्या प्रकट करते हैं?

शुरू से ही शैतान की योजना मानव प्राणियों को यह विश्वास दिलाने की रही है कि परमेश्वर वास्तव में न्यायी और प्रेमपूर्ण नहीं था और उसका नियम उनके लिए दमनकारी और हानिकारक था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु शैतान को "झूठा और झूठ का पिता" कहता है (यूहन्ना 8:44)। इसके विपरीत, यीशु "सच्चाई की गवाही देने" के लिए आए (यूहन्ना 18:37) और सीधे शैतान के झूठ और बदनामी का मुकाबला किया, पराजित किया और अंततः, शैतान और उसकी शक्ति को नष्ट कर दिया (1 यूहन्ना 3:8, इब्रानी 2:14).

प्रकाशितवाक्य 12:9, 10 शैतान की पहचान (1) "पुराने सांप" के रूप में करता है, (2) वह जो स्वर्गीय अदालत में परमेश्वर के लोगों पर आरोप लगाता है, और (3) अजगर शासक के रूप में जो दुनिया को धोखा देता है। ग्रीक शब्द "शैतान" का अनुवाद केवल "निंदक" है, जो एक बार फिर दिखाता है कि संघर्ष की प्रकृति विश्वासों पर है, जिसमें परमेश्वर के चरित्र के बारे में विश्वास भी शामिल है।

अतिरिक्त विचार: Read Ellen G. White, "The Origin of Evil," pp- 492–504, in The Great Controversy.

"पवित्रशास्त्र में इससे अधिक स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं सिखाया गया है कि पाप के प्रवेश के लिए परमेश्वर किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं था; ईश्वरीय कृपा की कोई मनमाने ढंग से वापसी नहीं थी, ईश्वरीय सरकार में कोई कमी नहीं थी, जिसने विद्रोह के भड़कने का अवसर दिया। पाप एक घुसपैठिया है, जिसकी उपस्थिति का कोई कारण नहीं बताया जा सकता। यह रहस्यमय है, बेहिसाब है; इसे माफ करना इसका बचाव करना है। . . . यदि उसका (शैतान) तुरंत अस्तित्व से मिटा दिया जाता, तो वे (स्वर्ग और अन्य दुनिया के निवासी) प्रेम के बजाय भय से परमेश्वर की सेवा करते। धोखेबाज का प्रभाव पूरी तरह से नष्ट नहीं हुआ होगा, न ही विद्रोह की भावना पूरी तरह से समाप्त हुई होगी। बुराई को परिपक्वता तक आने देना चाहिए। अनंत युगों तक संपूर्ण ब्रह्मांड की भलाई के लिए शैतान को अपने सिद्धांतों को और अधिक विकसित करना होगा, ताकि ईश्वरीय सरकार के खिलाफ उसके आरोपों को सभी सृजित प्राणियों द्वारा उनके सच्चे प्रकाश में देखा जा सके, कि परमेश्वर का न्याय और दया और उसके कानून की अपरिवर्तनीयता हमेशा के लिए सभी सवालों से परे रखा जा सकता है।" – एलेन जी. व्हाइट, द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, पेज 492, 493, 499।

चर्चागत प्रश्न:

1. बहुत से लोग आश्चर्य करते हैं कि लूसिफर जैसा पापरहित प्राणी पहली बार कैसे पाप कर सकता है। पाप इतना "रहस्यमय" और "बेहिसाब" क्यों है? हम इस पहले पाप को बिना क्षमा किये या उचित ठहराये कैसे समझा सकते हैं? अर्थात्, इसकी उत्पत्ति की व्याख्या करना इसे उचित ठहराने के समान क्यों होगा?

2. परमेश्वर ने शैतान को तुरंत अस्तित्व से क्यों नहीं मिटा दिया? बुराई को "परिपक्वता तक आने की अनुमति" क्यों दी जानी चाहिए? यह "अनंत युगों तक संपूर्ण ब्रह्मांड की भलाई के लिए" कैसे है?

3. यह समझना इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि ईश्वर और शैतान के बीच संघर्ष केवल शक्ति का नहीं है, बल्कि एक अलग तरह का संघर्ष है?

चरित्र को लेकर संघर्ष किस रीति से उस तरह से अर्थ रखता है जिस तरह से केवल सत्ता को लेकर संघर्ष नहीं कर सकता?

4. संघर्ष की प्रकृति को समझने से कैसे पर्दा हट जाता है, ऐसा कहें तो, उन तरीकों पर से जिनमें आपका अपना जीवन लौकिक संघर्ष का एक सूक्ष्म रूप हो सकता है? आप किस तरह से इस संघर्ष की वास्तविकता को अब भी अनुभव कर रहे हैं? आपको किस तरह से प्रतिक्रिया देनी चाहिए जिससे पता चले कि आप वास्तव में किसके पक्ष में हैं?